International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

# हड़प्पा सभ्यता में घग्गर बेसिन की मुद्राओं का अध्ययन

**राजेश कुमार**
शोधार्थी (इतिहास), द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर, (उत्तर प्रदेश)

**डॉ. राज कुमार**
शोध निर्देशक, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर, (उत्तर प्रदेश)

**सारांश**

हड़प्पा सभ्यता, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन भारत की सबसे उन्नत और व्यवस्थित सभ्यताओं में से एक थी। इसकी शुरुआत लगभग 3300 ईसा पूर्व मानी जाती है और इसका विकास 2600 से 1900 ईसा पूर्व के बीच अपने चरम पर पहुंचा। घग्गर बेसिन में पाई जाने वाली हड़प्पाई मुद्राओं का अध्ययन सभ्यता के व्यापारिक, प्रशासनिक, धार्मिक और कला के पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध होता है। घग्गर बेसिन में पाई जाने वाली मुद्राओं पर उकेरी गई छवियाँ और प्रतीक विशेष रुचि के हैं। सबसे आम प्रतीकों में सांड, हाथी, गैंडा, और बाघ जैसी पशु आकृतियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से सांड की छवि सबसे आम है।

यह संभावना व्यक्त की जाती है कि सांड उस समय की प्रमुख कृषि अर्थव्यवस्था का प्रतीक हो सकता है, जो कि पशुपालन और कृषि पर आधारित थी। अन्य पशु, जैसे हाथी और गैंडा, क्षेत्र की जैव विविधता और वन्यजीवन की ओर इशारा करते हैं, जबकि बाघ की छवि शायद शक्ति और राजसीता का प्रतीक हो सकती है। इन प्रतीकों की उपस्थिति यह भी दर्शाती है कि हड़प्पा सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं में पशु-पक्षियों का महत्वपूर्ण स्थान था। इसके अलावा, घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर मानव आकृतियाँ और देवी-देवताओं के प्रतीक भी उकेरे गए हैं। इन प्रतीकों को धार्मिक और आध्यात्मिक मान्यताओं से जोड़कर देखा जा सकता है।

कुछ मुद्राओं पर उकेरी गई योगासन मुद्रा में बैठे हुए मानव आकृतियाँ संकेत करती हैं कि उस समय योग और ध्यान जैसी गतिविधियाँ प्रचलित थीं। धार्मिक प्रतीकों में वृक्ष भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हड़प्पा सभ्यता की मुद्राओं पर उकेरे गए पीपल या अंजीर के वृक्ष को जीवन और उर्वरता का प्रतीक माना जाता है। यह उस समय की वनस्पति और पर्यावरणीय मान्यताओं के साथ-साथ धार्मिक धारणाओं की ओर भी संकेत करता है।

**मुख्यशब्द-** हड़प्पा सभ्यता, घग्गर बेसिन, सिंधु घाटी सभ्यता, मुद्रा

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

**प्रस्तावना**

घग्गर-हाकड़ा बेसिन का भूगोल और इतिहास हड़प्पा सभ्यता के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र आज राजस्थान, हरियाणा, और पंजाब के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है और कभी एक विशाल नदी प्रणाली का हिस्सा था, जिसे पौराणिक सरस्वती नदी के रूप में भी पहचाना जाता है। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार, घग्गर और हाकड़ा नदियाँ हड़प्पा काल में बड़ी और जल प्रवाह वाली नदियाँ थीं, जिनके किनारे पर कई बस्तियाँ और शहर विकसित हुए थे। इन नदियों के किनारे स्थित बस्तियाँ, जैसे कालीबंगा, बनावली, और राखीगढ़ी, न केवल कृषि और पशुपालन के लिए उपयुक्त थीं, बल्कि व्यापारिक मार्गों के महत्वपूर्ण केंद्र भी थीं। नदी के किनारे की उपजाऊ भूमि ने कृषि उत्पादन को बढ़ावा दिया, जो हड़प्पा सभ्यता के लोगों के जीवन का एक प्रमुख हिस्सा था। इस क्षेत्र का कृषि उत्पादन और पशुपालन आर्थिक समृद्धि का आधार था, जिसने व्यापारिक नेटवर्क के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

घग्गर बेसिन का हड़प्पा सभ्यता के संदर्भ में महत्व केवल भौगोलिक या आर्थिक नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र महत्वपूर्ण था। इस क्षेत्र में पाए गए पुरातात्विक साक्ष्य, जैसे मुद्रा, मूर्तियाँ, और बर्तन, सभ्यता के धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को समझने में सहायक होते हैं। घग्गर बेसिन की मुद्राओं और अन्य पुरावशेषों पर उकेरी गई छवियाँ, जैसे पशु आकृतियाँ, धार्मिक प्रतीक, और मानव आकृतियाँ, उस समय की धार्मिक धारणाओं और सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। घग्गर बेसिन में योगासन में बैठे हुए मानव आकृतियाँ भी मिली हैं, जो यह दर्शाती हैं कि उस समय योग और ध्यान जैसी प्रथाएँ प्रचलित थीं। इसके अलावा, पीपल और अंजीर जैसे पवित्र वृक्षों के प्रतीकों का प्रयोग भी उस समय की धार्मिक धारणाओं में प्रकृति की पूजा का संकेत देता है।

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना और वास्तुकला का घग्गर बेसिन में महत्वपूर्ण योगदान है। इस क्षेत्र के नगरों की खुदाई से पता चला है कि हड़प्पाई नगरों में एक सुव्यवस्थित नगर योजना थी, जिसमें सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं, और घरों का निर्माण ईंटों से किया जाता था। इन नगरों में जल निकासी व्यवस्था भी अत्यंत उन्नत थी, जिसमें घरों से निकलने वाले गंदे पानी को नालियों के माध्यम से बाहर निकाला जाता था। कालीबंगा और राखीगढ़ी जैसे नगरों की खुदाई से यह पता चला है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग न केवल वास्तुकला और नगर योजना में निपुण थे, बल्कि उनके पास जल संचयन और जल प्रबंधन की उन्नत तकनीक भी थी, जो घग्गर बेसिन के सूखने के बाद भी उन्हें इस क्षेत्र में रहने योग्य बनाए रखती थी।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

घग्गर बेसिन में पाई जाने वाली मुद्राएँ हड़प्पा सभ्यता की आर्थिक व्यवस्था और व्यापारिक नेटवर्क की झलक प्रस्तुत करती हैं। इन मुद्राओं पर उकेरे गए प्रतीक, जैसे सांड, हाथी, और बाघ, उस समय की कृषि और व्यापारिक गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह संकेत करता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग स्थानीय और दूरदराज के क्षेत्रों से व्यापारिक लेन-देन करते थे। विशेष रूप से घग्गर बेसिन का क्षेत्र सिंधु घाटी के प्रमुख व्यापारिक मार्गों में से एक था, जो इसे मध्य एशिया, फारस, और मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्कों के लिए एक प्रमुख केंद्र बनाता था। इन मुद्राओं के माध्यम से हमें यह भी पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता में मुद्रा का उपयोग केवल व्यापारिक लेन-देन के लिए नहीं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था।

घग्गर बेसिन की खुदाई से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष हड़प्पा सभ्यता की सामाजिक संरचना और जीवन शैली की जानकारी भी प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र में पाई जाने वाली धातु की वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तन, और अन्य दैनिक उपयोग की चीजें उस समय के लोगों की जीवनशैली, कला कौशल, और सामाजिक संगठन की झलक देती हैं। उदाहरण के लिए, धातु की वस्तुओं का उपयोग कृषि उपकरणों और हथियारों के निर्माण में होता था, जो हड़प्पा काल की तकनीकी प्रगति और कौशल का प्रतीक है। इसके अलावा, इस क्षेत्र में पाए गए कुछ अवशेष, जैसे मनके, आभूषण, और सजावटी वस्तुएँ, उस समय के लोगों की सांस्कृतिक और सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं को उजागर करते हैं।

## घग्गर बेसिन की मुद्राओं के प्रमुख प्रतीक और उनकी व्याख्या

घग्गर बेसिन, जिसे प्राचीन सरस्वती नदी की घाटी के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक और ऐतिहासिक धरोहर है। यह क्षेत्र हड़प्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ से बड़ी संख्या में प्राचीन मुद्राएँ, वस्त्र, औजार, और अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इन मुद्राओं पर विभिन्न प्रकार के प्रतीक और चिह्न पाए जाते हैं, जो न केवल उस समय की सामाजिक, धार्मिक, और आर्थिक गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं, बल्कि प्राचीन संस्कृति के प्रतीकात्मक और धार्मिक मान्यताओं की झलक भी प्रस्तुत करते हैं।

घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाने वाले प्रमुख प्रतीकों में पशु प्रतीक, मानव आकृतियाँ, पौराणिक और काल्पनिक जीव, वृक्ष, स्वस्तिक, त्रिशूल, और ज्यामितीय आकृतियाँ शामिल हैं। ये प्रतीक हड़प्पा सभ्यता की धार्मिक आस्थाओं, व्यापारिक नेटवर्क, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों और सामाजिक संरचनाओं के बारे में महत्वपूर्ण संकेत देते हैं।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

**1. पशु प्रतीक:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाने वाले पशु प्रतीकों में प्रमुख रूप से बैल, गैंडा, हाथी, बकरी, और मछली शामिल हैं। ये प्रतीक उस समय के समाज में पशुओं के महत्वपूर्ण स्थान को दर्शाते हैं। विशेष रूप से बैल का प्रतीक शक्ति, कृषि, और अर्थव्यवस्था का प्रतीक माना जाता था। यह प्रतीक हमें उस समय के समाज में पशुपालन और कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताता है। इसके अलावा, गैंडा और हाथी जैसे जानवरों के प्रतीक शौर्य और साहस का संकेत देते हैं, जबकि मछली का प्रतीक जल स्रोतों और जल से संबंधित गतिविधियों की महत्ता को दर्शाता है।

**2. मानव आकृतियाँ:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर कुछ मानव आकृतियाँ भी उकेरी गई हैं, जो संभवतः धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें से कुछ आकृतियाँ योगमुद्रा या ध्यान की मुद्रा में पाई गई हैं, जो इस बात का संकेत हैं कि उस समय के समाज में योग और ध्यान का विशेष महत्व था। कुछ मुद्राओं पर मानव आकृतियों को हथियारों के साथ भी दिखाया गया है, जो संभवतः योद्धाओं या शासकों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

**3. पौराणिक और काल्पनिक जीव:** पौराणिक और काल्पनिक जीव जैसे एकसिंगी घोड़ा या एकसिंगी पशु भी इन मुद्राओं पर प्रमुखता से पाए जाते हैं। इन प्रतीकों का सही अर्थ या व्याख्या करना कठिन है, लेकिन इन्हें विभिन्न सांस्कृतिक मान्यताओं, धार्मिक कथाओं, और प्रतीकात्मक अर्थों के साथ जोड़ा जा सकता है। एकसिंगी घोड़े का प्रतीक शक्ति और शुद्धता का द्योतक हो सकता है। इसके अलावा, काल्पनिक जीवों का उपयोग शायद उस समय के समाज की पौराणिक कथाओं और धार्मिक विश्वासों को व्यक्त करने के लिए किया जाता था।

**4. वृक्ष और प्राकृतिक प्रतीक:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर वृक्षों और अन्य प्राकृतिक प्रतीकों का भी उल्लेखनीय स्थान है। वृक्षों को जीवन, उर्वरता, और समृद्धि के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। कुछ मुद्राओं पर पीपल के वृक्ष या अन्य वृक्षों को प्रमुखता से दर्शाया गया है, जो उस समय की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतीक हो सकते हैं। इन प्रतीकों का उपयोग शायद कृषि की महत्ता और प्रकृति के साथ मानव के गहरे संबंधों को दर्शाने के लिए किया गया था।

**5. स्वस्तिक और त्रिशूल:** स्वस्तिक और त्रिशूल जैसे धार्मिक प्रतीक भी घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाते हैं। स्वस्तिक का प्रतीक शुभता, समृद्धि, और उन्नति का द्योतक है और यह कई प्राचीन संस्कृतियों में पाया जाता है। यह प्रतीक जीवन के चक्र और पुनर्जन्म के विचार को भी व्यक्त करता है। त्रिशूल का प्रतीक शक्ति और सुरक्षा का संकेत है, और यह प्राचीन भारतीय धर्मों में प्रमुखता से पाया जाता है, विशेष रूप से शिव की पूजा के संदर्भ में। इन धार्मिक प्रतीकों

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

की उपस्थिति से यह संकेत मिलता है कि उस समय के समाज में धार्मिक आस्थाएँ और संस्कार महत्वपूर्ण थे, और इनका गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व था।

**6. ज्यामितीय आकृतियाँ:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर कई प्रकार की ज्यामितीय आकृतियाँ भी पाई जाती हैं, जैसे गोल, चौकोर, और त्रिकोणीय आकृतियाँ। ये आकृतियाँ शायद उस समय के समाज के गणितीय ज्ञान और ज्यामिति की समझ को दर्शाती हैं। इन आकृतियों का उपयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठानों, व्यापारिक गणनाओं, या कुछ अन्य सांस्कृतिक कार्यों के संदर्भ में किया जाता होगा।

**7. व्यापार और सामाजिक संरचना:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाने वाले प्रतीक न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संकेत प्रदान करते हैं, बल्कि उस समय के व्यापारिक और सामाजिक ढांचे के बारे में भी जानकारी देते हैं। मुद्राओं पर अंकित प्रतीकों से संकेत मिलता है कि घग्गर बेसिन का समाज व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों में समृद्ध था। कुछ मुद्राओं पर जहाजों, व्यापारिक चिह्नों, और माप की इकाइयों के प्रतीक पाए जाते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि समाज का व्यापारिक नेटवर्क बहुत व्यापक था और संभवतः अन्य सभ्यताओं के साथ व्यापारिक संबंध भी स्थापित थे।

**8. धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व:** घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर मौजूद प्रतीकों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी उल्लेखनीय है। इन मुद्राओं पर उकेरे गए प्रतीक धार्मिक आस्थाओं, पूजा पद्धतियों, और सांस्कृतिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें से कई प्रतीकों का उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों, धार्मिक वस्त्रों, और धार्मिक स्थल सजावट के रूप में भी किया गया हो सकता है। इससे यह संकेत मिलता है कि हड़प्पा सभ्यता का समाज धार्मिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आयोजन के प्रति गहरा आस्थावान था।

## घग्गर बेसिन की मुद्राओं का अन्य प्राचीन सभ्यताओं के साथ सांस्कृतिक संपर्क

घग्गर बेसिन की मुद्राओं का अध्ययन हमें प्राचीन भारत की सभ्यताओं और अन्य समकालीन प्राचीन सभ्यताओं के बीच सांस्कृतिक संपर्कों को समझने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगरों में मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, राखीगढ़ी, और कालीबंगन शामिल हैं, और घग्गर-हाकरा नदी के किनारे स्थित क्षेत्र को हड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है। इस क्षेत्र में पाई जाने वाली मुद्राओं पर अंकित प्रतीक, पशु आकृतियाँ, और शिलालेख उन सांस्कृतिक आदान-प्रदान का संकेत देते हैं जो इस प्राचीन सभ्यता ने अन्य समकालीन सभ्यताओं जैसे कि मेसोपोटामिया, सुमेर, मिस्र, और फारस के साथ किया होगा।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

**1. व्यापारिक संपर्क और आदान-प्रदान:**

घग्गर बेसिन की मुद्राएँ प्राचीन व्यापारिक मार्गों के संकेतक के रूप में कार्य करती हैं। हड़प्पा सभ्यता का व्यापारिक नेटवर्क न केवल भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर फैला हुआ था, बल्कि इसका संबंध दूर-दराज के क्षेत्रों जैसे कि मेसोपोटामिया, सुमेर, और फारस से भी था। हड़प्पा और मेसोपोटामिया के बीच व्यापारिक संबंधों के प्रमाण हमें मेसोपोटामिया के शाही अभिलेखों में मिलते हैं, जहां 'मेलुहा' नामक स्थान का उल्लेख मिलता है, जो हड़प्पा सभ्यता से संबंधित माना जाता है। यह संभावना है कि हड़प्पा के व्यापारी, तांबे, सोना, चांदी, रत्न, और अन्य वस्त्रों का आदान-प्रदान करने के लिए मेसोपोटामिया की ओर यात्रा करते थे। घग्गर बेसिन से प्राप्त मुद्राओं पर अंकित प्रतीकों की शैली और आकृतियाँ कुछ हद तक मेसोपोटामिया के व्यापारिक सील और मुहरों की शैली से मेल खाती हैं, जो इस सांस्कृतिक संपर्क के प्रमाण हैं।

**2. धार्मिक प्रतीकों और सांस्कृतिक प्रभाव का प्रसार:**

घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाने वाले धार्मिक प्रतीक, जैसे कि पशुपति आकृति, योगी मुद्रा, और अन्य देवी-देवताओं के प्रतीक, न केवल हड़प्पा समाज के धार्मिक विश्वासों को दर्शाते हैं, बल्कि अन्य प्राचीन सभ्यताओं के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान के संकेत भी देते हैं। उदाहरण के लिए, हड़प्पा की मुद्राओं पर एक-सींग वाले बैल (यूनिकॉर्न) की आकृति मेसोपोटामिया और सुमेर की मुद्राओं पर पाए जाने वाले पशुओं के प्रतीकों के समान प्रतीत होती है। यह संकेत करता है कि इन सभ्यताओं के बीच धार्मिक प्रतीकों का आदान-प्रदान हुआ हो सकता है, जो किसी प्रकार के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संपर्क की ओर इशारा करता है। इसी प्रकार, हड़प्पा और मेसोपोटामिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अन्य प्रमाण भी मिलते हैं, जैसे कि विशिष्ट शिल्पकला की तकनीकें, जिन्हें दोनों सभ्यताओं में अपनाया गया था।

**3. कला और शिल्पकला का प्रभाव:**

घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर उकेरी गई आकृतियों और शिलालेखों की शैली का अध्ययन करने से पता चलता है कि हड़प्पा की कला पर अन्य सभ्यताओं का प्रभाव पड़ा था। हड़प्पा सभ्यता की मुद्राओं में पाए जाने वाले ज्यामितीय आकृतियों और प्रतीकों का कुछ हद तक मेल सुमेरियन और अक्कादी मुद्राओं पर पाए जाने वाले प्रतीकों से भी होता है। यह संभव है कि हड़प्पा और अन्य समकालीन सभ्यताओं के कलाकारों और शिल्पकारों के बीच किसी प्रकार का तकनीकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ हो, जिसके कारण विभिन्न शिल्पकला रूपों में समानताएँ पाई जाती हैं।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

मेसोपोटामिया में मिलने वाले कुछ हड़प्पा शैली की मुद्राओं के प्रमाण यह भी दर्शाते हैं कि हड़प्पा के शिल्पकारों ने अपने व्यापारिक केंद्रों में स्थानीय संस्कृति के साथ घुल-मिलकर काम किया होगा। यह सांस्कृतिक एकीकरण और कला के माध्यम से विचारों के प्रसार का संकेत है, जो उस समय की वैश्विकता का प्रतीक है।

**4. प्रशासनिक प्रक्रियाओं में समानताएँ:**

मुद्राओं का उपयोग प्राचीन सभ्यताओं में प्रशासनिक और व्यापारिक गतिविधियों के लिए किया जाता था, और घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर पाए जाने वाले शिलालेख और प्रतीक यह दर्शाते हैं कि हड़प्पा समाज में भी मुद्राओं का उपयोग किसी प्रकार की प्रशासनिक प्रक्रिया के लिए किया जाता था। हड़प्पा लिपि का पूरी तरह से अर्थ नहीं लगाया जा सका है, लेकिन इसकी उपस्थिति अन्य प्राचीन सभ्यताओं की लेखन प्रणालियों जैसे कि सुमेरियन क्यूनिफॉर्म और मिस्री हाइरोग्लिफ्स से तुलना करने का अवसर प्रदान करती है। इन लेखन प्रणालियों में पाई जाने वाली समानताएँ यह संकेत करती हैं कि प्राचीन सभ्यताओं ने एक-दूसरे से लेखन और रिकॉर्ड-कीपिंग की तकनीकें सीखीं और अपनाईं।

**5. सामाजिक और राजनीतिक संपर्क:**

घग्गर बेसिन की मुद्राओं से जुड़े सांस्कृतिक संपर्क केवल व्यापार तक ही सीमित नहीं थे; इनके माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक संबंधों का भी पता चलता है। विभिन्न सभ्यताओं के राजनैतिक नेताओं के बीच गठजोड़ और संधियाँ संभवतः इन मुद्राओं के माध्यम से पुष्टि की जाती थीं। मेसोपोटामिया और हड़प्पा के बीच संबंधों के प्रमाण यह दर्शाते हैं कि दो सभ्यताएँ न केवल व्यापारिक साझेदार थीं, बल्कि किसी प्रकार के कूटनीतिक संबंध भी बनाए हुए थीं।

**6. धार्मिक अनुष्ठान और प्रतीकात्मकता का प्रसार:**

घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर उकेरे गए प्रतीक, जो पशुपति, देवी-देवताओं, या पवित्र जानवरों के रूप में प्रकट होते हैं, यह संकेत देते हैं कि हड़प्पा समाज और अन्य प्राचीन सभ्यताओं के बीच धार्मिक प्रतीकों का प्रसार हुआ था। धार्मिक अनुष्ठानों के लिए समान प्रतीकों का उपयोग यह दर्शाता है कि प्राचीन समाजों के बीच धर्म और आध्यात्मिकता का एक साझा दृष्टिकोण हो सकता है, जिसे उन्होंने एक-दूसरे से सीखा और अपनाया।

**7. पारिस्थितिक और भौगोलिक संदर्भ:**

घग्गर बेसिन की मुद्राओं पर चित्रित पशु आकृतियाँ और प्रतीक यह भी दर्शाते हैं कि उस समय की सभ्यताओं के बीच भौगोलिक और पर्यावरणीय संबंध थे। विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों और जलचर प्राणियों की उपस्थिति

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

यह इंगित करती है कि इन सभ्यताओं के लोग अपने पर्यावरण के साथ गहरे से जुड़े हुए थे, और वे विभिन्न जानवरों का आर्थिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक उपयोग करते थे।

घग्गर बेसिन की मुद्राओं का अन्य प्राचीन सभ्यताओं के साथ सांस्कृतिक संपर्क न केवल प्राचीन भारत की सभ्यताओं के विकास और विस्तार का एक महत्वपूर्ण पहलू है, बल्कि यह प्राचीन समाजों के बीच अंतरराष्ट्रीय व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, और सामाजिक-राजनीतिक संबंधों की जटिलता को भी प्रकट करता है। मुद्राओं पर अंकित प्रतीक, शिलालेख, और पशु आकृतियाँ उस समय के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं, और यह संकेत देते हैं कि हड़प्पा सभ्यता ने अपने समकालीन सभ्यताओं के साथ गहरे और बहुआयामी संपर्क बनाए रखे थे। इन मुद्राओं के अध्ययन से हमें यह समझने का अवसर मिलता है कि प्राचीन समाजों ने कैसे अपने ज्ञान, तकनीक, और सांस्कृतिक धरोहरों को एक-दूसरे के साथ साझा किया और एक वैश्विक दृष्टिकोण के बीज बोए, जो आधुनिक सभ्यताओं के विकास के लिए एक आधारशिला के रूप में कार्य करता है।

## घग्गर बेसिन का पुरातात्विक महत्व और हड़प्पा सभ्यता की विविधता

घग्गर बेसिन का पुरातात्विक महत्व और हड़प्पा सभ्यता की विविधता भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। घग्गर नदी, जिसे प्राचीनकाल में सरस्वती के रूप में भी जाना जाता था, उत्तर भारत के पश्चिमी भाग में बहती थी। घग्गर-हकरा नदी प्रणाली का क्षेत्र, जो आजकल अधिकतर सूखा हुआ है, हड़प्पा सभ्यता के समय में जल से भरपूर था और यहां अनेक हड़प्पाई बस्तियों का विकास हुआ। यह बेसिन हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों जैसे राखीगढ़ी, कालीबंगन, बनवाली, धोलावीरा, और हड़प्पा की समृद्धता का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। इन स्थलों के उत्खनन और विश्लेषण से प्राप्त जानकारियाँ हड़प्पा सभ्यता की सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक संरचना को गहराई से समझने में मदद करती हैं।

घग्गर बेसिन के हड़प्पा स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि यह सभ्यता 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक फैली हुई थी और यहाँ का समाज एक उन्नत और संगठित शहरी व्यवस्था को अपनाए हुए था। हड़प्पा सभ्यता के नगर नियोजन की विशेषता इसकी अद्वितीय ईंटों से बनी संरचनाएँ, सुनियोजित सड़कों, और जल निकासी प्रणालियों में देखी जा सकती है। इन नगरों में मकानों, गलियों, और नालियों का सुव्यवस्थित

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

ढांचा यह दिखाता है कि हड़प्पा लोग शहरीकरण के उच्च स्तर पर पहुँच चुके थे। राखीगढ़ी, जो हरियाणा में स्थित है, को हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा ज्ञात स्थल माना जाता है। यहाँ पर की गई खुदाई से ईंटों के बने विशाल संरचनाओं, जल निकासी प्रणालियों, और अनाज भंडारों के अवशेष मिले हैं जो इस क्षेत्र की समृद्धि और यहां के निवासियों की उन्नत जीवनशैली को उजागर करते हैं।

राखीगढ़ी और अन्य स्थलों जैसे कालीबंगन, जो राजस्थान में स्थित है, की खुदाई से यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता का घग्गर बेसिन में एक सशक्त उपस्थिति थी। कालीबंगन में अग्निवेदियों के अवशेष और मिट्टी के बर्तनों के नमूने हड़प्पा सभ्यता के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की जानकारी देते हैं। अग्निवेदियों के अवशेष यह दर्शाते हैं कि इस क्षेत्र में यज्ञ या अग्नि पूजा जैसी धार्मिक प्रथाएं प्रचलित थीं, जो संभवतः हड़प्पा लोगों के धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों का हिस्सा थीं। इसके अलावा, सिंचाई के प्रमाण भी कालीबंगन में मिले हैं, जो हड़प्पा समाज की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की पुष्टि करते हैं। घग्गर नदी के किनारे स्थित इन स्थलों से यह भी संकेत मिलता है कि जल प्रबंधन और सिंचाई की उन्नत तकनीकें हड़प्पा सभ्यता के कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

धोलावीरा, जो गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित है, हड़प्पा सभ्यता के एक अन्य प्रमुख स्थल के रूप में उभर कर सामने आता है। धोलावीरा में जलाशयों और जल प्रबंधन प्रणाली के अवशेष मिले हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि हड़प्पा लोग जल संचयन और प्रबंधन के क्षेत्र में कितने कुशल थे। धोलावीरा के उत्खनन से प्राप्त जलाशयों की विशालता और उनका निर्माण तकनीक यह दर्शाते हैं कि घग्गर बेसिन में हड़प्पा सभ्यता की विविधता केवल स्थापत्य कला तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनके जीवन के अन्य पहलुओं, जैसे कि जल प्रबंधन, में भी परिलक्षित होती थी। धोलावीरा में पाए गए शिलालेख और मुद्राएँ हड़प्पा समाज के सामाजिक और प्रशासनिक संरचना की जानकारी भी देते हैं। यह साइट अन्य हड़प्पा स्थलों से इस मायने में भिन्न है कि यहां पर बड़े द्वार और खुले सार्वजनिक स्थान भी पाए गए हैं, जो अन्य स्थलों पर कम ही देखे जाते हैं।

बनवाली, जो हरियाणा में स्थित है, भी घग्गर बेसिन के हड़प्पा स्थलों में से एक है और यहां से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता की शिल्पकला और घरेलू जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। मिट्टी के बर्तनों की भिन्नता, निर्माण सामग्री और सजावट की तकनीकें यह दर्शाती हैं कि हड़प्पा सभ्यता में क्षेत्रीय विविधता थी। बनवाली और अन्य स्थलों के अवशेषों का तुलनात्मक अध्ययन यह भी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

दर्शाता है कि यद्यपि यह सभ्यता एक साझा संस्कृति का हिस्सा थी, फिर भी प्रत्येक स्थल की अपनी विशिष्टताएँ और स्थानीय विविधताएँ थीं।

घग्गर बेसिन का पुरातात्विक महत्व केवल भौतिक अवशेषों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यहां से प्राप्त सामग्री हड़प्पा सभ्यता के व्यापारिक नेटवर्क और आर्थिक गतिविधियों के बारे में भी जानकारी देती है। यहाँ से मिली मुद्राएँ, सील, और विदेशी वस्तुएँ यह इंगित करती हैं कि हड़प्पा सभ्यता का एक विस्तृत व्यापारिक संपर्क था, जो पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया और दक्षिणी भारत तक फैला हुआ था। घग्गर बेसिन के स्थलों से प्राप्त पत्थर के मोती, तांबे के उपकरण, और कीमती धातुएं, व्यापारिक आदान-प्रदान और संसाधनों के विनिमय के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यह व्यापारिक संपर्क हड़प्पा सभ्यता की आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण अंग था और इसके माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक प्रभाव भी फैलते थे।

हड़प्पा सभ्यता की पतन के कारणों के संदर्भ में, घग्गर-हकरा नदी का सूखना एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय परिस्थितियों में आए बदलावों के कारण घग्गर नदी प्रणाली सूख गई, जिससे इस क्षेत्र में कृषि और जल आपूर्ति बाधित हो गई। इसके अतिरिक्त, अन्य कारणों जैसे आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता, बाहरी आक्रमण, और महामारी ने भी इस सभ्यता के पतन में भूमिका निभाई हो सकती है। हालांकि, इन स्थलों के निरंतर अध्ययन और नई तकनीकों के उपयोग से पतन के कारणों को और स्पष्टता से समझने में मदद मिल रही है।

घग्गर बेसिन के हड़प्पा स्थलों की पुरातात्विक महत्ता का अध्ययन केवल अतीत के बारे में जानने के लिए नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है। यहां पर होने वाले उत्खनन और शोध से हम यह समझ सकते हैं कि प्राचीन समाजों ने पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कैसे किया और अपने संसाधनों का प्रबंधन किस प्रकार किया। हड़प्पा सभ्यता का जल प्रबंधन, शहरीकरण, और व्यापारिक नेटवर्क जैसे पहलू आज के समय में भी शहरी विकास, जल संसाधन प्रबंधन, और व्यापार के अध्ययन में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

इस प्रकार, घग्गर बेसिन का पुरातात्विक महत्व और हड़प्पा सभ्यता की विविधता भारतीय इतिहास और पुरातत्व के लिए एक समृद्ध स्रोत हैं। यह बेसिन न केवल हमें हड़प्पा सभ्यता की उन्नत तकनीक, कला, और सामाजिक संरचना की जानकारी देता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि प्राचीन समाज अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूलन में कितने सक्षम थे। घग्गर बेसिन के हड़प्पा स्थलों का अध्ययन हमें यह भी सिखाता है कि विविधता और क्षेत्रीय भिन्नताएँ किसी भी संस्कृति के विकास और

उसकी स्थायित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## निष्कर्ष

यह शोध घग्गर बेसिन में पाई जाने वाली मुद्राओं के माध्यम से हड़प्पा सभ्यता की आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, और सांस्कृतिक संरचना को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है। मुद्राओं का विश्लेषण इस सभ्यता के व्यापारिक नेटवर्क, प्रशासनिक प्रक्रियाओं, और धार्मिक विश्वासों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है, जो हड़प्पा समाज के संगठनात्मक ढाँचे को उजागर करने में सहायक है। इसके अलावा, यह अध्ययन मुद्राओं के प्रतीकों और लेखों के माध्यम से हड़प्पा समाज के विभिन्न वर्गों और समूहों के बीच संबंधों को समझने का प्रयास करता है, जो इस सभ्यता की बहुस्तरीय संरचना को स्पष्ट करता है। घग्गर बेसिन का अध्ययन हड़प्पा सभ्यता के विकास, विस्तार, और पतन के कारणों को भी समझने में मदद कर सकता है, जिससे इस प्राचीन सभ्यता की व्यापकता और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता को पुनः परिभाषित किया जा सके।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ग्रिजलवा, के. और कोवाच, आर. और नूर, ए. (2016). परिपक्व हड़प्पा सभ्यता के दौरान विवर्तनिक गतिविधि के लिए साक्ष्य, 2600-1800 ईसा पूर्व। ए. जी. यू. फॉल मीटिंग सार।
2. चटर्जी, अनिर्बान और रे, ज्योतिरंजन। (2017). कालीबंगन से हड़प्पा मिट्टी के बर्तनों का भू-रसायन और घग्गर नदी में तलछटः एक मरती हुई नदी के लिए सुराग। भूविज्ञान सीमाएँ। 9. 10.1016/j. gsf. 2017.07.006.
3. सिंह, अजीत और जैन, विक्रांत और डेनिनो, मिशेल और चौहान, नवीन और कौशल, राहुल और गुहा, शांतामॉय और नंदगोपाल, प्रभाकर। (2021). हड़प्पा युग के दौरान हिमालय की तलहटी की नदियों की बड़ी बाढ़ घग्गर-हाकरा चैनल में बहती रही। जर्नल ऑफ क्वाटर्नरी साइंस। 36. 611-627। 10.1002/jqs.3320.
4. कुरुप, रविकुमार और कुरुप, परमेसरा। (2019). प्रायद्वीपीय भारत के हड़प्पा आर्य-द्रविड़-सभी सभ्यताओं की माँ।
5. शिंदे, वसंत और ली, हाइजिन और यादव, योगेश और वाघमारे, प्रांजली और जाधव, नीलेश और हांग, जोंग हा और किम, योंग और शिन, डोंग हून। (2018). हड़प्पा सभ्यता के राखीगढ़ी कब्रिस्तान में एक युवा जोड़े की कब्र मिली। एनाटॉमी एंड सेल बायोलॉजी

51. 200 है। 10.5115/acb. 2018.51.3.200.

6. यांग, युझांग और हमीद, डॉ और समीर, मुहम्मद आजम। (2021). हरप्पान सभ्यता के सांस्कृतिक इतिहास और इसके मूल्यांकन पर एक संक्षिप्त चर्चा-एंथ्रोपोलोजिकल और एथनोग्राफिक तरीकों के माध्यम से।
7. गोराई, संजय और रथ, द्वारकानाथ और धीर, अमित। (2021). वर्षा परिवर्तनशीलता को बाढ़ जोखिम के अनुकूल बनानाः घग्गर नदी बेसिन का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ द जियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया। 97. 1347-1354। 10.1007/s 12594-021-1873-1.
8. क्लिफ्ट, पीटर और जिओसन, लिविउ। (2018). सिंधु बेसिन में नदियों, जलवायु और मानव समाजों का होलोसीन विकास। 10.14324/111.978191157693.
9. खान, इमरान। (2020). हरियाणा के मैदानी क्षेत्र, उत्तर-पश्चिम भारत में पालीओ-यमुना नदी का जल निकासी पुनर्गठन और उपसतही स्तरीकरण और हड़प्पा सभ्यता से इसका संबंध। जून,। (2022). पाकिस्तान में मोहनजो-दारो और हड़प्पा सभ्यता की ऐतिहासिक समीक्षा। पैसिफिक इंटरनेशनल जर्नल। 5. 31-42 तक। 10.55014/pij. v5i 2.185.
10. कुरुप, रविकुमार और कुरुप, परमेसरा। (2019). प्रायद्वीपीय भारत के हड़प्पा आर्य-द्रविड़-सभी सभ्यताओं की माँ।
11. सिंह, चंदर और मोही उद दीन, आसिफ। (2021). घग्गर नदी बेसिन के मध्य क्षेत्रों में अन्वेषण पर प्रारंभिक अध्ययन। प्राचीन एशिया। 12. 10.5334/एए. 214.
12. मेमोकू, हिदेकी और शिताओका, योरिनाओ और नागटोमो, सुनेतो और यागी, हिरोशी। (2012). परिपक्व हड़प्पा काल के दौरान घग्गर नदी शासन पर भू-आकृति विज्ञान संबंधी बाधाएं। भूभौतिकीय मोनोग्राफ श्रृंखला। 198. 97-106 है। 10.1029/2012 जीएम001218।
13. दिव्योपामा, आस्था और किम, योंग और ओह, चांग सेओक और शिन, डोंग हून और शिंदे, वसंत। (2015). भारत में प्राचीन दफन स्थलों से मानव कंकाल अवशेषः हड़प्पा सभ्यता के विशेष संदर्भ के साथ। कोरियाई जर्नल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी। 28. 10.11637/kjpa. 2015.28.1.1.
14. सिन्हा, राजीव और यादव, जी. और गुप्ता, संजीव और सिंह, अजीत और

लाहिरी, सिद्धार्थ। (2013). उत्तर-पश्चिम भारत में हड़प्पा स्थलों से सटे उपसतह पैलियोचैनल प्रणालियों के लिए भू-विद्युत प्रतिरोधकता प्रमाण। क्वाटर्नरी इंटरनेशनल। 308-309। 66-75 के बीच। 10.1016/j. quaint. 2012.08.002.